Conclusion

उपसंहार

'हिन्दी और गुजराती में साठोत्तरी उपन्यासों में मध्यवर्ग' विषय पर शोध करने पर मैंने पाया कि समाज के विचारों, मूल्यों, संस्कृति को वहन करनेवाला मध्यमवर्ग ही है और उसे परिवर्तित करने वाला भी मध्यमवर्ग ही है। इस अध्ययन में मैंने विभिन्न चरणों में विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया एवं अपनी स्थापनाएँ प्रस्तुत की।

भारतीय समाज के मध्यमवर्ग के विविध रूपों को प्रथम अध्याय में समाहित किया गया है। इसमें मैंने समाज की परिभाषा और सामाजिक स्तरीकरण पर प्रकाश डाला है। प्रमुख आर्थिक वर्ग को विभिन्न भागों में विभाजित किया है। जिसमें उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग एवम् निम्नवर्ग के वैशिष्ट्य पर दृष्टिपात किया है। हिन्दी और गुजराती के आरंभिक उपन्यासों में मध्यमवर्ग को चित्रित किया है। हिन्दी उपन्यासों में पं. श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत 'भाग्यवती', लाला श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु', भारतेन्दु हरिशचन्द्र कृत 'कुछ आपबीती, कुछ जगबीती', किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'बड़ा भाई' इत्यादि उपन्यासों का अध्ययन किया गया है। गुजराती भाषा के उपन्यासों में महीपतराम नीलकंठ कृत 'सासु वहु नी लडाई', हरगोविन्ददास कांटावाला कृत 'अंधेरी नगरीनो गर्धवसेन', श्री के. खुशरू काबराजी कृत 'दुखियारी वहु', गोवर्धनराम मा. त्रिपाठी कृत 'सरस्वतीचंद्र', इच्छाराम सूर्यराम देसाई कृत 'गंगा–एक गुर्जर वार्ता', कृष्णराव दीवेटिया कृत 'मुकुल मर्दन', सुमित्र कृत 'अलक्ष्य ज्योति' का सामान्य परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्यायः 'साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती के प्रमुख सामाजिक उपन्यासों में मध्यमवर्ग' को लिया है। जिसमें साठोत्तरी उपन्यास से तात्पर्य और पृष्ठभूमि को लिया गया है। मैंने देखा कि साठोत्तरी उपन्यासों में भारतीय समाज और मध्यमवर्ग का चित्रण करने का प्रयास किया गया है। हिन्दी में 'अंधेरे बन्द कमरे' (मोहन राकेश), 'रुकोगी नहीं राधिका' (उषा प्रियंवदा), 'अमृत और विष' (मोहन राकेश), 'कान्दली और कुहासे' (गिरिधर गोपाल), 'बेघर' (ममता कालिया), 'आपका बण्टी' (मन्नू भण्डारी), 'तेरी मेरी उसकी बात' (यशपाल) इत्यादि उपन्यासों को शोध प्रबन्ध का विषय बनाया है। गुजराती उपन्यासों में 'धुम्मस' (विनोद जोषी), 'झंझा' (रावजी पटेल), 'अमृता' (रमेश ओझा), 'वांसनो अंकुर' (धीरुबहन पटेल), 'चल–अचल' (हस्नित बूच), 'श्रावणी' (शिवकुमार जोषी), 'सात पगलां आकाशमां' (कुन्दनिका कापड़ीआ), 'खरी पडेलो टहुको' (वर्षा अडालजा) इत्यादि पर प्रकाश डाला है।

तृतीय अध्याय 'विवेच्य उपन्यासों में नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थिति से सम्बन्धित है। जिसे मैंने विभिन्न उपविभागों में बाँटा है। जिसमें मैंने पुरानी और आधुनिक पीढ़ी के वैचारिक मतभेद, नैतिक मूल्यों में बदलाव, पाश्चात्यकरण का मध्यमवर्गीय समाज पर प्रभाव इत्यादि बातों पर प्रकाश डाला है। चूँकि मेरा विषय हिन्दी और गुजराती उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन है, इसलिए गुजराती उपन्यासों का भी अध्ययन किया है।

साठोत्तरी मध्यमवर्गीय उपन्यासों के अध्ययन के दौरान मध्यवर्ग की सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थिति के कारण बनती–बिगड़ती स्थिति के चित्रण करने का प्रयास किया है। साथ ही साथ मध्यमवर्गीय समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, बेईमानी, घूटन, निराशा, कुण्ठा, विवशता आदि बातों पर ध्यान दिया है। साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती उपन्यासों के अध्ययन के दौरान मैंने देखा कि आज मध्यमवर्गीय समाज में नवीन नैतिक मूल्यों का आगमन हुआ है। साथ ही साथ पुराने परंपरागत नैतिक मूल्यों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है। मैंने महसूस किया कि पुरानी पीढ़ी के मूल्यों के प्रति नई पीढ़ी की आस्था डगमगाने लगी है। लेकिन इसके साथ यह बात भी मेरे ध्यान में आयी है कि मध्यमवर्ग पर सांस्कारिक प्रभाव इतने गहरे हैं कि पारंपरिक मूल्यों से न तो अपने आपको संपूर्ण रूप से विलग कर पा रहे हैं और ना ही उसका स्पष्ट विरोध व्यक्त कर पाता है। अब नैतिकता तो उनके लिए समाज के सामने केवल दिखावा मात्र है।

श्रीलाल शुक्ल कृत 'राग–दरबारी' उपन्यास का अध्ययन करते समय हम देख सकते हैं कि मध्यमवर्गीय पुरुष पात्र गयादीन नैतिकता को रास्ते में पड़ी कुतिया कहता है। मैंने देखा कि आधुनिक मध्यमवर्गीय समाज में दैनिक परिस्थितियों के मुताबिक युवक–युवतियों को स्वच्छंदतापूर्वक मिलने–जुलने का अवसर प्राप्त हुआ है। जिसमें मैंने नारी–शिक्षा और नारी स्वतंत्रता दोनों बातों को अन्तर्निहित पाया। गुजराती उपन्यास 'अमृता' की अविवाहित नारी पात्र अमृता भी अपने परिवार (छाया) को छोड़कर अलग रहने चली जाती है। गुजराती और हिन्दी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए मैंने देखा कि मध्यमवर्गीय समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्थाएँ डगमगाने लगी हैं। मैंने देखा कि मध्यमवर्गीय युवा वर्ग में प्रेम एवम् यौन के क्षेत्र में नैतिकता के नवीन प्रयोग हो रहे हैं। दोनों भाषाओं के उपन्यासों में हम देख सकते हैं कि नयी पीढ़ी के मध्यमविद व्यक्ति अनेक साहचर्य संबंध में विश्वास करने लगे हैं। साथ ही रुपये, पैसे, जमीन–जायदाद इत्यादि कारणों से भी मध्यमवर्ग में नैतिक मूल्यों की गिरावट हुई है। गुजराती उपन्यास 'आपणो घडीक संग' का अध्यापक चन्द्र, मधुराय की

'कामिनी', 'उर्ध्वमूल' उपन्यास में माया का पति, 'तिराड' उपन्यास का 'बलदेव' आदि पात्रों के माध्यम से देख सकते हैं।

'मछली मरी हुई' में दो बहनों के समलैंगिक संबंधों को लेकर नैतिकता का परिचय कराया है तो 'किम्बल रेवन्सवूड' गुजराती उपन्यास में विशाखा और उसके पिताजी के बीच अनैतिक खुला वक्तव्य के माध्यम से उद्घाटित करने का प्रयास किया है। यहाँ तक कि हिन्दी और गुजराती उपन्यासों में मध्यमवर्गीय स्त्री पात्र स्वच्छंद, मुक्त विचारधारा और नैतिकता के मापदंड को व्यर्थ माननेवाली है। जो 'मित्रो मरजानी' की 'मित्रो' और गुजराती उपन्यास 'कामिनी' की 'कामिनी' द्वारा हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है।

अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि साठोत्तरी हिन्दी और गुजराती उपन्यासों में नैतिक अवमूल्यन के कारण ही मध्यमवर्ग में मानव-संबंधों में विच्छेद, अति महत्वाकांक्षा, अधिकाधिक पैसा प्राप्त करने की इच्छा एवं अधिकाधिक स्वतंत्रता भोगने की दौड़ लगी रहती है। हम देख सकते हैं कि इन सारी बातों में नारी भी पीछे नहीं है।

जिस तरह मध्यमवर्ग में नैतिक मूल्य बदल रहे हैं, ठीक उसी तरह धर्म का परंपरागत स्वरूप भी बदल रहा है। यह बात दोनों भाषाओं के उपन्यासों में देख सकते हैं। मैंने पुरानी पीढ़ी और नयी आधुनिक पीढ़ी के बीच धार्मिक मतभेद को पाया है। 'अमृत और विष' का युवा पात्र रमेश मन्दिर की अपेक्षा संघ को महत्व देता है तो उसके पिताजी संघ की अपेक्षा मंदिर को ज्यादा महत्व देते हैं। लेकिन अध्ययन के दौरान यह बात पर भी ध्यान गया कि मध्यमवर्ग में परंपरागत धार्मिक मूल्यों का प्रभाव पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुआ है। जिस बात का पता मुझे 'मछली मरी हुई' के मध्यमवर्गीय पुरुष पात्र पदमावत् के द्वारा चलता है। क्योंकि वह धर्म पर अविश्वास करता हुआ भी दक्षिणा काली की मूर्ति अपने शयनकक्ष में रखता है। यह भी देखने में आया कि मध्यमवर्ग के युवापात्र अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परंपरागत धार्मिक मूल्यों को उखाड़ने का प्रयास करते हैं।

मेरे ध्यान में यह बात भी आयी कि हिन्दी उपन्यासों के मध्यमवर्ग की तुलना में गुजराती उपन्यासों का मध्यमवर्ग कुछ अंश में ज्यादा अंधश्रद्धालु है। धार्मिक मूल्यों की अवहेलने उन्होंने भी की है, लेकिन उतनी नहीं जितनी हिन्दी उपन्यासों के मध्यमवर्गीय पात्रों ने। नास्तिक और आस्तिक दोनों के बीच कौन-सी परिस्थिति है यह बताना मध्यमवर्गीय पात्रों के लिए कठिन है। 'फेरो' उपन्यास का नायक पिता विनायक अपने गूँगे बेटे 'भैं' के कारण अंधश्रद्धालु बनकर सूर्यपूजा, भागवतपुराण कथा का आयोजन कराता है।

'चिन्ह' उपन्यास का नायक उदय भी अपंग है। उसके परिवारजन भी उसके लिए बाधा, मानता आदि रखते हैं। 'किम्बल रेवन्सवूड' का योगेश वैसे तो फोरेन रीटर्न है, लेकिन ज्योतिषशास्त्र के चक्कर में पड़कर बारह राशिवाली कन्याओं को देखता है। साथ ही साथ मेरी नजर में साठोत्तरी उपन्यासों में धर्म की बदलती परिस्थिति भी आयी है, जिसको गुजराती उपन्यास 'जातक कथा' और 'कथापर्व' में देख सकते हैं।

मैंने अपने संशोधन के दौरान यह भी देखा कि गुजराती और हिन्दी के साठोत्तरी मध्यमवर्गीय उपन्यासों में आधुनिक युवा–वर्ग ने परंपरागत सांस्कृतिक मान्यताओं को झूठा साबित करते हुए नवीन दृष्टिकोण एवम् प्रतिमानों को गढ़ा है। हिन्दी उपन्यास 'उखड़े हुये लोग' के मध्यविद पुरुष पात्र शरद को पाप–पुण्य की व्याख्या ओछी लगती है। उसे वर्तमान पर भी भरोसा नहीं है।

हम यह भी देख सकते हैं कि दोनों भाषाओं के उपन्यासों में दो विभिन्न संस्कृति का मिलन दर्शाया गया है। हिन्दी उपन्यास 'जिन्दगी नामा' में विभाजन–पूर्व के पंजाब की सांस्कृतिक तासीर को दिखाया गया है। ठीक उसी तरह गुजराती उपन्यास 'किम्बल रेवन्सवूड' में अमेरिका–शिकागो, गुजरात–अहमदाबाद की संस्कृति का चित्रण देख सकते हैं।

तीसरे अध्याय के पेटा विभाग के रूप में मैंने हिन्दी और गुजराती साठोत्तरी उपन्यासों में मध्यमवर्ग की आर्थिक परिस्थिति पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। मैंने देखा कि आर्थिक विषमता के कारण आज मध्यमवर्ग को महँगाई, निर्धनता, बेरोजगारी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'आखिरी दाँव' का जीवनराम पैसों के लिए अपनी पत्नी तक को बेचता हुआ देख सकते हैं। 'थके पाँव' का केशव अर्थ के कारण अपना ईमान बेचता है। रिश्वत लेना शुरु कर देता है। मध्यमवर्ग आधुनिकता की चकाचौंध में फँसता जा रहा है। समाज के सामने दिखावा करने में पायमाल होता हुआ देख सकते हैं। 'अमृत और विष' का रमेश अपनी बहन की शादी में अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक खर्च करने के बारे में सोचता है। बढ़ती हुई महँगाई के कारण 'कन्दली और कुहासे' का मध्यविद् किशू को त्रस्त और बेबस पाया जाता है। आर्थिक विषमता की असर दाम्पत्य जीवन पर भी पड़ती देख सकते हैं। जिस बात का पता 'अंधेरे बन्द कमरे' में हरबंस और नीलिमा के दाम्पत्य जीवन के द्वारा चलता है। आर्थिक विषमता की भोग मध्यमवर्गीय नारी भी बनी है। 'डाक बंगला' की इरा जैसी मध्यमवर्गीय स्त्रियों का घर बनाने का स्वप्न इसी कारणवश टूट जाता है। यहाँ तक कि लड़कियों की शादी भी किसी के साथ भी करवा दी जाती है। गुजराती उपन्यासों में भी

आर्थिक विषमता के कारण मध्यमवर्ग की यही हालत देख सकते हैं। 'किम्बल रेवन्सवूड' में मध्यमवर्गीय स्त्रीपात्र ममता खरीदारी करते समय चालाकी, बेईमानी कैसे करनी चाहिए यह योगेश को बताती है। संपत्ति के कारण ही परिवार में झगड़े देखने को मिलते हैं। 'कूवो' उपन्यास में कुँए के पानी के बँटवारे का झगड़ा तो भाईयों में पाया जाता है। 'आगन्तुक' उपन्यास मे ईशान को पितृसंपत्ति से उसका बड़ा भाई ही वंचित कर देता है। सीमित आय के कारण मध्यमवर्ग में नारी भी नौकरी करने लगी है। 'नाईटमेर' की नियति इस कारणवश नौकरीपेशा बन जाती है। दोनों भाषाओं का अध्ययन करते समय मैंने यह वैषम्य देखा कि गुजराती उपन्यास के मध्यमवर्गीय पात्र में स्वाभिमान से जीने की अटूट भावना मौजूद है। जबकि हिन्दी उपन्यासों के मध्यमवर्ग में, इस बात की कमी है। 'अमृता' उपन्यास का नायक उदयन स्वाभिमानवश अपनी नौकरी छोड़ देता है। आर्थिक विषमता के कारण गुजराती उपन्यासों में पढ़े–लिखे मध्यमवर्गीय युवा पात्र बेकारी की अवस्था में जीते हैं। 'अमृता' उपन्यास की अमृता भी पीएच.डी. करने के बाद भी बेकार है। इस प्रकार मध्यमवर्ग से सम्बन्धित साठोत्तरी उपन्यासों में आर्थिक विषमता के कारण मध्यमवर्ग की बनती–बिगड़ती परिस्थिति का सोद्देश्य वर्णन करने का प्रयत्न किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'विवेच्य उपन्यासों में मध्यमवर्ग की विविध समस्याएँ' से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्याय में मैंने विवेच्य हिन्दी और गुजराती उपन्यासों में पाई जाने वाली विविध समस्याओं का आकलन किया है। संशोधन के दौरान देखा गया कि बढ़ती हुई महँगाई, बेरोजगारी, स्वतंत्र विचारधारा, स्वच्छंदता एवम् आत्मीय भावना की कमी के कारण मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं। साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में यह समस्या प्रायः देखने को मिलती है। नरेश मेहता कृत 'दो एकान्त', भगवतीचरण वर्मा कृत 'भूले बिसरे चित्र', अमृतलाल नागर कृत 'अमृत और विष', रामदरश मिश्र कृत 'जल टूटता हुआ' इत्यादि उपन्यासों में संयुक्त परिवार के विघटन को दिखाया गया है।

मैंने देखा कि मध्यमवर्गीय परिवारों में आज पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम भावना का स्थान बौद्धिक तत्व ने लिया है। इसी समस्या को गुजराती उपन्यासों के मध्यमवर्गीय परिवारों में देख सकते हैं। यहाँ पर पैसा और अस्तित्व को पारिवारिक विघटन का कारण बनते देखा जा सकता है। वीनेश अंताणी कृत 'प्रियजन' में चारु के दोनों बेटे संपत्ति की दौड़ में शहर में जाकर बस गये हैं। मध्यवर्गीय शिक्षित नारी की अतिमहत्वाकांक्षा भी संयुक्त परिवार के विघटन का कारण बनते देख सकते हैं। जो दोनों भाषाओं के उपन्यासों में समान रूप से देख सकते हैं। हिन्दी उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' की राधिका और गुजराती

उपन्यास 'अमृता' की अमृता ऐसी ही पात्र के रूप में देखने को मिलती हैं।

मध्यमवर्ग में पारंपरिक नैतिक मूल्यों का ह्रास भी समस्या के रूप में देखने को मिलता है। सेक्स सम्बन्धी मुक्त विचार, विवाहेत्तर सम्बन्ध और यौन समस्या आम बात बन गई है। हिन्दी उपन्यास 'मछली मरी हुई' की शीरीं अपनी बहन के साथ समलैंगिक सम्बन्ध बाँधती हुयी नज़र आती है। 'एक पति के नोट्स' का नायक अपनी पत्नी को छोड़कर अपनी पड़ोसन के साथ शारीरिक सम्बन्ध बाँधता है। 'मित्रो मरजानी' की मित्रो की यौन अतृप्ति के सामने नैतिकता के मापदंड तो कुछ भी नहीं हैं। 'एक तारा' का नायक भी पारंपरिक नैतिक मूल्यों को नीति–अनीति के मुताबिक बदला हुआ पाता है। साठोत्तरी गुजराती उपन्यासों में भी मध्यमवर्ग स्वच्छंद और बौद्धिक होने के कारण पारंपरिक नैतिक मूल्यो को तोड़ता हुआ दिखाया गया है। 'छिन्न पत्र' की माला को स्वच्छंदता की हद में कई प्रेमियों के साथ सम्बन्ध रखे हुये देख सकते हैं। नैतिक मूल्यों का ह्रास इस हद तक पाया जाता है कि राधेश्याम शर्मा कृत 'फेरो' उपन्यास की नायिका स्वयं दाम्पत्य जीवन केजातीय संकेत और अतृप्ति को खुलकर बताती हुयी दिखायी गयी है। गुजराती उपन्यासों में मध्यमवर्गीय नौजवान सेक्स के बारे में मुक्त मन से चर्चा करते हैं। 'किम्बल रेवन्सवूड' में विशाखा योगेश से कहती है कि उसे सेक्सी लड़का ज्यादा पसंद है।

उपर्युक्त समस्याओं के अलावा हिन्दी और गुजराती के मध्यमवर्ग से सम्बन्धित उपन्यासों में विधवा विवाह की समस्या, दहेज समस्या, बेमेल विवाह की समस्या भी देखने को मिलती है। भगवतीप्रसाद वाजपेयी कृत 'चलते चलते' में विधवा लाली का भाई पुनःविवाह करता है तो उस समय लाली के मन में विद्रोह का स्वर देखने को मिलता है। साथ ही साथ आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप इन उपन्यासों में विधवा पुनर्विवाह पर बल दिया गया है। 'अमृत और विष' में विधवा रानी के साथ रमेश पुनर्विवाह करते हुये देख सकते हैं। विधवा की दारुण परिस्थिति का चित्रण भी देखने को मिलता है। यशपाल कृत 'मनुष्य के रूप' में विधवा सोमा को घर भर का अत्याचार सहन करते दिखाया गया है। विधवा की यही स्थिति गुजराती उपन्यासों में दिखायी गई है। कभी कभी तो वैधव्य की यह वेदना इतनी असह्य दिखाई गई है कि नारी अपने जीवन को ही व्यर्थ मानती है। यह परिस्थिति का खयाल हमें 'फेरो' उपन्यास की बाल विधवा, 'प्रियजन' की चारु, 'बत्रीस पुतळीनी वेदना' की बड़ी अम्मा के माध्यम से होता है। गुजराती उपन्यासों की तुलना में हिन्दी उपन्यासों की विधवा की स्थिति ज्यादा दयनीय दिखाई गई है। वह अकेलेपन, निराशा और हताशा के मनोरोगों का शिकार होती हुयी दिखायी गयी है।

संशोधन के दौरान देखा कि अर्थ की समस्या ही दहेज समस्या और बेमेल विवाह की समस्या को पैदा करती है। 'कितने चौराहे' में आर्थिक विपन्नता के कारण मोहरिल मामा अपनी बेटी को दो बच्चों के पिता के साथ विवाह करवा देता है। अनमेल विवाह का मूल भी दहेज समस्या से ही पैदा हुआ दिखाया गया है। निम्न मध्यमवर्ग दहेज देने में असमर्थ होने से ही वह अपनी लड़कियों का बेमेल विवाह् कर देते हैं। 'अलग–अलग वैतरणी' उपन्यास में पुष्पा की शादी इसी कारणवश विधुर से करवा दी जाती है। 'माटी की महक' में भी माधो पंडित दहेज दे पाने में असमर्थ निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों को उनकी बेटी के लिए प्रौढ़ पुरुष, निकम्मे लड़के या विधुर ही दिखाता है और निम्न मध्यमवर्ग दहेज की समस्या से छुटकारा पाने के लिए अपनी बेटी की शादी उसके साथ करवाता हुआ भी दिखाया गया है। गुजराती उपन्यासों में भी बेमेल विवाह, दहेज की समस्या को उठाया गया है। गुजराती उपन्यासों में कहीं–कही बेमेल विवाह को दिखाया गया है, लेकिन भिन्न रूप से। 'नाईटमेर' उपन्यास में देख सकते हैं कि नायिका की शादी अपने प्रेमी से न होकर उसके भाई के साथ होती है, जो बेमेल विवाह ही है। 'प्रियजन' में चारू की शादी भी अन्य के साथ कर दी जाती है। दहेज समस्या के मुद्दे को 'किम्बल रेवन्सवूड' में उठाया गया है। योगेश के पिता बेटा फोरेन रिटर्न होने से तगड़ा दहेज लेने के बारे में सोचते हैं। लेकिन इस उपन्यास में योगेश के माध्यम से दहेज प्रथा का विरोध भी दिखाया गया है।

मैंने देखा कि मध्यम वर्ग में प्रवर्तमान सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों की विषमतावश मध्यमवर्गीय व्यक्ति संत्रास, घुटन, निराशा, अकेलेपन, अलगाव बोध रूपी मनोवैज्ञानिक समस्याओं से गुजरता है, जिसका विवरण भी हमें गुजराती और हिन्दी के साठोत्तरी उपन्यासों में देखने को मिलता है। साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में हमें जगह–जगह ऐसे मध्यमवर्गीय पात्र देखने को मिलते हैं जो अति महत्वाकांक्षा और अति स्वातंत्र्य से संत्रस्त हो उठते हैं। मोहन राकेश कृत 'न आनेवाला कल' में शोभा–मनोज के बीच हमेशा अदृश्य तीसरा व्यक्ति हमेशा बना रहता है, जो उनके संत्रास का कारण बनते देखा जाता है। यही हालत गुजराती उपन्यास 'अमृता' की अमृता की भी है। तब वह 'छाया' (निवासस्थान) को छोड़कर परिवार से अलग रहने का निर्णय करती है। अध्ययन करते समय हम देख सकते हैं कि मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपनी खुद की तय की हुई अवधारणा या विचारधारा के कारण भी पीड़ित और कुण्ठाग्रस्त है। वह निराशा और घुटन का भोग बनता है। ममता कालिया कृत 'बेघर' में नायक कुँवारेपन की उसकी अवधारणा के कारण उसका जीवन निराशा और कुण्ठा से भर जाता है। ठीक उसी तरह गुजराती उपन्यास 'मरणोत्तर' का नायक मृणाल

भी अनेक स्त्रियों के साथ सम्बन्ध बाँधते हुए भी अकेलेपन का अनुभव करता है। 'आगन्तुक' का ईशान भी अलगाव बोध का अनुभव करता दिखाई देता है।

मैंने देखा कि हिन्दी उपन्यास के मध्यमवर्ग की तुलना में गुजराती उपन्यास का मध्यमवर्ग ज्यादा संवेदनशील होने से ज्यादा मानसिक तनाव को भुगतता है।

हिन्दी और गुजराती के साठोत्तरी उपन्यासों में मध्यमवर्गीय नारी की विविध समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। साठोत्तरी उपन्यासों में नारी स्वतंत्रता, समानता एवम् आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया है। यहाँ पर मध्यमविद् नारी परंपरागत रुढ़िचुस्त मान्यताओं का विरोध करती दिखायी देती है। 'भूले बिसरे चित्र' की विद्या, 'झूठा सच' की तारा, 'चौदह फेरे' की कल्याणी, 'ऋतुचक्र' की प्रतिमा, 'रुकोगी नहीं राधिका' की राधिका, 'मित्रो मरजानी' की मित्रो, 'छोटी चम्पा बड़ी चम्पा' की छोटी चम्पा, 'एक स्वर आँसु का' की आरती इत्याति मध्यमवर्गीय स्त्रियाँ सामाजिक कठोर परंपरा का विरोध करती दिखाई देती है। इसी समस्या को गुजराती उपन्यास में 'अमृता' की अमृता, 'बत्रीस पुतळीनी वेदना' की छाया, 'प्रियजन' की चारू, 'कामिनी' की कामिनी के माध्यम से उठाने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी और गुजराती के साठोत्तरी उपन्यासों में मध्यमवर्गीय तलाक के दुष्परिणाम को भी चित्रित करने का प्रयास किया गया है। मन्नू भंडारी कृत 'आपका बंटी' में मध्यवर्गीय पति–पत्नी के तलाक एवम् उसके कारण बंटी (बच्चे) के मानसिक द्वंद्व, व्यथा को चित्रित किया हुआ देख सकते हैं। 'एक इंच मुस्कान' में भी रंजना के पति के विवाहेत्तर संबंध से खिन्न होकर पति–पत्नी के सम्बन्ध को तोड़ती हुयी दिखाई गयी है। इसी समस्या को साठोत्तरी गुजराती उपन्यासों में आर्थिक विषमता के कारण पैदा होती हुयी देखी जाती है। 'मिश्र लोही' की नायिका अणिमा अपने पति ब्राक से इसलिए तलाक लेती है क्योंकि उसका पति आर्थिक रूप से उस पर निर्भर होता है।

प्रेम और विवाहेत्तर संबंध भी उपन्यासों में जगह–जगह देखने को मिलते हैं। 'भूले बिसरे चित्र', 'दो एकान्त', 'मन वृंदावन', 'अलग–अलग वैतरणी', 'बैसाखियों वाली इमारत' इत्यादि हिन्दी उपन्यास एवम् गुजराती के 'कामिनी', 'मरणोत्तर', 'प्रियजन', 'नाईटमेर', 'कल्पतरु', 'उर्ध्वमूल', 'निशाचक्र' उपन्यासों में देख सकते हैं। इस प्रकार साठोत्तरी उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन की त्रासद स्थितियों को उल्लेख सहज रूपों में पा सकते हैं।

पाँचवा अध्याय 'विवेच्य उपन्यासों के संरचनात्मक वैशिष्ट्य' से सम्बन्धित है। मैंने प्रस्तुत अध्याय

में विवेच्य हिन्दी और गुजराती उपन्यासों का भाषा शिल्प, कथावस्तु, संवाद, विविध भाषाओं के शब्दों, कहावतों द्वारा विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जिसमें आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, फ्लैशबेक शैली, इन्टरव्यू शैली के साथ–साथ अंग्रेजी, फारसी, उर्दू भाषा के साम्य–वैषम्य को भी दिखाया गया है।

अस्तु। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि साठोत्तरी हिन्दी एवं गुजराती उपन्यासों में प्रस्तुत मध्यमवर्ग कथ्य, शिल्प, भाषिक–संरचना, नवीन प्रयोगों की दृष्टि से हिन्दी एवं गुजराती उपन्यास साहित्य, वैचारिक एवं सांस्कृतिक बदलाव की दिशा को रेखांकित करने में सक्षम है।

* * * * *

पाँचवा अध्याय : संदर्भ सूचि

1. प्रकाशचन्द्र गुप्त : आज का हिन्दी उपन्यास, पृ. 169
2. मोहन राकेश : अंधेरे बन्द कमरे, भूमिका
3. डॉ. दशरथ ओझा : समीक्षा शास्त्र : पृ. 170
4. डॉ. तहसीलदार दुबे : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में शिल्प विधि का विकास, पृ. 252–253
5. डॉ. सुषमा अग्रवाल : मोहन राकेश, व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 274
6. मोहन राकेश : अंधेरे बन्द कमरे, पृ. 202–203
7. मोहन राकेश : अंधेरे बन्द कमरे, पृ. 212
8. डॉ. गोरधन सिंह : मोहन राकेश की कहानी यात्रा, पृ. 108
9. मोहन राकेश : अंधेरे बन्द कमरे, पृ. 11,20,23,24,26,28,30
10. वही – पृ. 9,10,11,12,14,16,19,20,21,23,24
11. वही – पृ. 10,12,13,14,20,29,30,38,49
12. डॉ. रमेशकुमार जाधव : मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ. 33,34
13. मोहन राकेश : अंधेरे बन्द कमरे, पृ. 13
14. मोहन राकेश : न आनेवाला कल, पृ. 18–19
15. मोहन राकेश : न आनेवाला कल, पृ. 10,11,12,15,21,25,26,30,44,61,76
16. वही – पृ. 6,8,11,12,13,14,17,18,22,23,27
17. वही – पृ. 7,14,15,16,17,22,33,34,44,68,82
18. वही – पृ. 49
19. मन्नू भण्डारी – आपका बण्टी
20. वही
21. वही
22. अश्क : एक नन्ही कन्दील : पृ. 755
23. वही, पृ. 655

24. डॉ. प्रतापनारायण टंडन : हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास, पृ. 84

25. अश्क : एक नन्हीं किन्दील : पृ. 543

26. वही – पृ. 199

27. डॉ. रमणभाई पटेल : सातवें दशक का हिन्दी उपन्यास, पृ. 97

28. गिरिधर गोपाल : कन्दली और कुहासे, पृ. 177

29. वही – पृ. 33

30. वही – पृ. 230

31. वही – पृ. 230

32. वही – पृ. 14

33. वही – पृ. 15

34. हिन्दी अपन्यास : सातवाँ दशक, पृ. 231

35. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी, आवरण के पृष्ठ से

36. आज कल, अगस्त–1972, पृ. 8

37. डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे : हिन्दी उपन्यास, विविध आयाम, पृ. 147

38. जयश्री बारहट्टे : हिन्दी उपन्यास – सातवाँ दशक, पृ. 196

39. डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे : हिन्दी उपन्यास – विविध आयाम

40. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी, पृ. 11

41. वही – पृ. 93

42. जयश्री बारहट्टे : हिन्दी उपन्यास – सातवाँ दशक, पृ. 181

43. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी, पृ. 219

44. वही – पृ. 293

45. वही – पृ. 115

46. वही – पृ. 195

47. वही – पृ. 141

48. वही – पृ. 72

49. वही – पृ. 258
50. वही – पृ. 351
51. वही – पृ. 153
52. वही – पृ. 32, 90, 100, 114, 382
53. जयश्री बारहट्टे : हिन्दी उपन्यास – सातवां दशक, पृ. 199
54. अमृतलाल नागर : अमृत और विष : पृ. 12
55. वही – पृ. 18
56. वही – पृ. 56
57. आलोचना (40), अक्टूबर–दिसम्बर (1967), पृ. 93 (हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यास – पुष्पा कछोड़, पृ. 130 से उद्धृत)
58. डॉ. सत्येन्द्र : हिन्दी उपन्यास विवेचन, पृ. 232
59. रघुवीर सहाय : मछली मरी हुई,पृ. 157
60. वही : पृ. 111
61. जयश्री बारहट्टे : हिन्दी उपन्यास – सातवाँ दशक, पृ. 238
62. रघुवीर सहाय : मछली मरी हुई, पृ. 150
63. ललित शुक्ल : दिशाओं का परिवेश, पृ. 45
64. रघुवीर सहाय : मछली मरी हुई : पृ. 88
65. वही – पृ. 46
66. वही – पृ. 97
67. वही – पृ. 17,29,49
68. रघुवीर चौधरी : अमृता, पृ. 107
69. वही – पृ. 197
70. वही – पृ. 46
71. वही – पृ. 117
72. वही – पृ. 232

73. वही – पृ. 448
74. वही – पृ. 494
75. वही – पृ. 108
76. वही – पृ. 80
77. वही – पृ. 153
78. वही – पृ. 124
79. वही – पृ. 112
80. बाबु दावलपुरा : कथापर्व, पृ. 2
81. सरोज पाठक : नाईटमेर, पृ. 25
82. तादर्थ्य : अंक सितम्बर, 1998
83. सरोज पाठक : नाईटमेर, पृ. 85
84. वही – पृ. 98
85. वही – पृ. 217
86. सुमन शाह : बक्षी नी फेरो, पृ. 123
87. वही – पृ. 118
88. मधुराय : कामिनी, पृ. 30
89. वही – पृ. 194
90. वही – पृ. 118
91. वही – पृ. 154
92. वही – पृ. 98
93. विनेश अंताणी : प्रियजन, पृ. 35
94. वही – पृ. 141
95. वही – पृ. 85
96. वही – पृ. 39
97. वही – पृ. 39-40

98. वही – भूमिका
99. इला आरब महेता : बत्रीस पूतळीनी वेदना, पृ. 5
100. वही – पृ. 7
101. वही – पृ. 34
102. वही – पृ. 14
103. वही – पृ. 26
104. वही – पृ. 13
105. वही – पृ. 13
106. वही – पृ. 176
107. धीरुबहेन पटेल : आगन्तुक – प्रारम्भ से पूर्व
108. वही – पृ. 28
109. वही – पृ. 87
110. वही – पृ. 15
111. वही – पृ. 71
112. वही – पृ. 58–59
113. वही – पृ. 111
114. वही – पृ. 169
115. मधुराय : किम्बल रेवन्सवूड, पृ. 6
116. वही – पृ. 9
117. वही – पृ. 111
118. वही – पृ. 151
119. वही – पृ. 134
120. गुजराती कथा विश्व, पृ. 363
121. मधुराय : किम्बल रेवन्सवूड, पृ. 81
122. वही – पृ. 115

123. वही - 262

124. मधुराय : कामिनी, पृ. 99

125. मोहन राकेश : अंधेरे बन्द कमरे, पृ. 13

126. रघुवीर चौधरी : अमृता, पृ. 125

127. मन्नू भंडारी : आपका बण्टी

128. विनेश अंताणी : प्रियजन, पृ. 176

129. मधुराय : किम्बल रेवन्सवूड, पृ. 173

* * * * *

: संदर्भ ग्रंथ सूचि :

हिन्दी

1. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : बदलता व्यक्ति, ममता पूर्वांचल प्रकाशन, प्र.सं. 1999
2. आधुनिकता के संदर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास : डॉ. अतुलवीर अरोड़ा, पब्लिकेशन्स ब्यूरो, चंडीगढ़, प्र.सं. 1974
3. भारतीय साहित्य : डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी
4. The Indian Middle Classes : B.B. Mishra, 1978
5. Castes : Old and New - Amore Beteille
6. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : मूल्य संक्रमण – डॉ. हेमेन्द्र पानेरी, संघ प्रकाशन, जयपुर
7. The great Indian Middle Class - Pavan Verma
8. H.M. 61 (H4A7)

   डॉ. राजेश्वर प्रसाद दर्शन
9. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चनसिंह, दूसरा संस्करण, निराला निवेश, 1998.
10. मोहन राकेश के साहित्य में नारी पात्र
11. हिन्दी लघु उपन्यास : डॉ. अमर प्रसाद गणेश प्रसाद जायसवाल – प्रकाशक – विद्याविहार – 1984.
12. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, सं. 1983
13. बेघर – ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2002
14. तीसरा आदमी : कमलेश्वर, राजपाल एण्ड सन्स, सं. 1982
15. हिन्दी उपन्यास के एक सौ वर्ष : बलराम और मनीराम, आलेख प्रकाशन, सं. 1985
16. न आनेवाला कल : मोहन राकेश, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, सं. 1984
17. हिन्दी उपन्यास का परिचयात्मक इतिहास – डॉ. प्रतापनारायण टंडन, विवेक प्रकाशन, सं. 1967

18. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास : रामविनोद सिंह, अनुपम प्रकाशन, सं. 1980
19. आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य : मूल्यों से प्रयाण – रघुवीर सिन्हा, प्रकाशन : दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, सं. 1980
20. हिन्दी लघु उपन्यास : घनश्याम 'मधुप' – राधाकृष्ण प्रकाशन
21. उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा : एक अध्ययन, डॉ. ललित अरोड़ा
22. हिन्दी उपन्यास : बदलते संदर्भ – डॉ. शशिभूषण सिंहल, प्रवीण प्रकाशन
23. हिन्दी उपन्यास – तीन दशक : डॉ. राजेन्द्र प्रताप, प्रकाशक : कौशल प्रकाशन
24. दिशाओं के परिवेश : ललित शुक्ल, वाणी प्रकाशन
25. उपन्यासकार अमृतलाल नागर : डॉ. दामोदर वशिष्ठ एवम् डॉ. आशा बागड़ी – मुदित प्रकाशन
26. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन : डॉ. एम. वेंकटेशन, अन्नपूर्णा प्रकाशन
27. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : मूल्य संक्रमण – डॉ. हेमेन्द्र पानेरी, संधी प्रकाशन, जयपुर
28. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में भारतीय युग का स्वरूप : डॉ. विमला सिंह, कला प्रकाशन
29. हिन्दी उपन्यास की प्रकृतियाँ – डॉ. शशिभूषण सिंहल, विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन
30. हिन्दी उपन्यासों का शिल्प–विधान : डॉ. प्रदीप शर्मा, अमय प्रकाशन
31. मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य – नंदिनी मिश्र, प्रकाशक – हिन्दी साहित्य भण्डार
32. उपन्यासकार उपेन्द्रनाथ 'अश्क' – डॉ. कुलदीप चन्द्रगुप्त, पंचशील प्रकाशन
33. हिन्दी उपन्यास : नये क्षितिज – डॉ. शशिभूषण सिंहल, प्रेम प्रकाशन मंदिर, 1992
34. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सं. नरेन्द्र मोहन, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इन्डिया लि.
35. महाकाव्यात्मक उपन्यासों की शिल्पविधि : डॉ. शंकर वसन्त मुद्गल, चन्द्रलोक प्रकाशन
36 हिन्दी का महाकाव्यात्मक उपन्यास : डॉ. पुष्पा कोछड, नचिकेता प्रकाशन
37. नागार्जुन का उप. साहित्य, समसामायिक सन्दर्भ – डॉ. सुरेन्द्रकुमार, वाणी प्रकाशन
38. हिन्दी के आंचलिक उपन्यास – डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. ज्ञानचन्द्रगुप्त, वाणी प्रकाशन

39 हिन्दी उपन्यास : अंतरंग पहचान – डॉ. प्रेमकुमार, गिरनार प्रकाशन

40. हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार : डॉ. अमरनाथ जायसवाल

41. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में जीवन दर्शन – सुमित्रा त्यागी

42. हिन्दी उपन्यास : सातवाँ दशक – जयश्री बारहट्टे

43. हिन्दी उपन्यास उपलब्धियाँ – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

44. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य – इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन

45. हिन्दी उपन्यास – डॉ. कुँवरपालसिंह, पांडुलिपि प्रकाशन

गुजराती

1. गुजराती नवलकथा : रघुवीर चौधरी और राधेश्याम शर्मा, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद.
2. गंगा – एक गुर्जर वार्ता : ईच्छाराम सूर्यराम देसाई
3. नंदशंकरथी उमाशंकर : डॉ. धीरेन्द्र महेता, आर.आर. शेठ कुं.. अहमदाबाद
4. निस्बत : डॉ. धीरेन्द्र महेता
5. सोनिस्टर : भोगीन्द्र राव
6. नवलकथा : शिरीष पंचाल, चंद्रमणि प्रकाशन, अहमदाबाद, तृतीय संस्करण
7. गुजराती कथाविश्व : बाबू दावलपुरा, नरेश वेद, राघव विवेक, वल्लभविद्यानगर
8. नवलकथा : स्वरूप और विकास : वसुबेन त्रिवेदी
9. गुजरातनां भाषा साहित्य पर आधुनिकीकरणनो प्रभाव : डॉ. विजय शास्त्री
10. विनोद जोशी : धुम्मस.
11. झंझा : रावजी पटेल, आर.आर. शेठ कुं., अहमदाबाद
12. वांसनो अंकुर : धीरुबहेन पटेल, गुर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद
13. छिन्नपत्र : सुरेश जोशी, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद
14. गुजराती कथा साहित्यमां नारी चेतना : हिमांशी शेलत, आर.आर. शेठ कुं, अहमदाबाद
15. श्रावणी : शिवकुमार जोशी
16. आगन्तुक : धीरुबहेन पटेल, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद
17. आपणो घडीक संग : दिगीश महेता, आदर्श प्रकाशन, अहमदाबाद, सं. 2000
18. कामिनी : मधुराय
19. तिराड : हरीश मंगलम्
20. निशाचक्र : किशोर जादव, रूपाली पब्लिकेशन, अहमदाबाद
21. अमृता : रघुवीर चौधरी, आर.आर. शेठ कुं, अहमदाबाद
22. बत्रीस पूतळीनी वेदना : इला आरब महेता

23. जातक कथा : चंद्रकान्त बक्षी, नवभारत साहित्य मंदिर, अहमदाबाद

24 कथापर्व–2 : बाबू दावलपुरा, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद

25. किम्बल रेवन्सवूड : मधुराय, वोरा, अहमदाबाद

26. कूवो : अशोकपुरी गोस्वामी, आर.आर. शेठ कां, अहमदाबाद

27. प्रियजन : विनेश अंताणी, आर.आर. शेठ कां, अहमदाबाद

28. मिश्र लोही : ईवा देव

29. फेरो : राधेश्याम वर्मा

30. नाईटमेर : सरोज पाठक

31. मरणोत्तर : सुरेश जोशी